"मीठे बच्चे - अपनी उन्नति के लिए रोज़ रात को सोने के पहले अपना पोतामेल देखो, चेक करो - हमने सारे दिन में कोई को दु:ख तो नहीं दिया?"

प्रश्नः- महान् सौभाग्यशाली बच्चों में कौन-सी बहादुरी होगी?

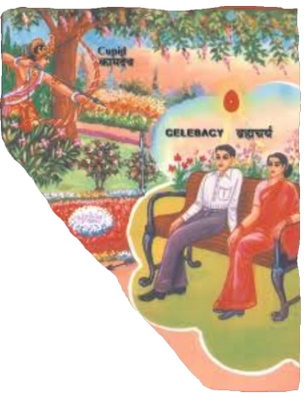

उत्तर:- जो महान् सौभाग्यशाली हैं वह स्त्री-पुरुष साथ में रहते भाई-भाई होकर रहेंगे। स्त्री-पुरुष का भान नहीं होगा। पक्के निश्चय बुद्धि होंगे। महान् सौभाग्यशाली बच्चे झट समझ जाते हैं - हम भी स्टूडेन्ट, यह भी स्टूडेन्ट, भाई-बहन हो गये, लेकिन यह बहादुरी चल तब सकती है जब अपने को आत्मा समझें।

गीत:-मुखड़ा देख ले प्राणी..... Click

ओम् शान्ति। यह बात रोज़-रोज़ बाप बच्चों को समझाते हैं कि सोने के समय अपना पोतामेल अन्दर देखो कि किसको दु:ख तो नहीं दिया और

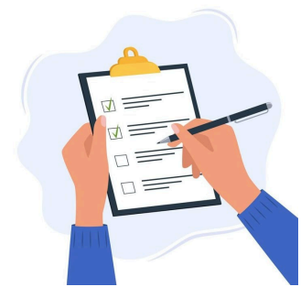

कितना समय बाप को याद किया? मूल बात यह है। गीत में भी कहते हैं अपने अन्दर देखो - हम कितना तमोप्रधान से सतोप्रधान बने हैं? सारे दिन में कितना समय याद किया अपने मीठे बाप को? कोई भी देहधारी को याद नहीं करना है। सभी आत्माओं को कहा जाता है अपने बाप को याद करो। अब वापिस जाना है। कहाँ जाना है?

How sweet...!

शान्तिधाम होकर नई दुनिया में जाना है। यह तो पुरानी दुनिया है ना। जब बाप आये तब स्वर्ग के द्वार खुलें। अभी तुम बच्चे जानते हो हम संगमयुग पर बैठे हैं। यह भी वन्डर है जो संगमयुग पर आकर स्टीमर में बैठकर फिर उतर जाते हैं। अब तुम संगमयुग पर पुरुषोत्तम बनने के लिए आकर नांव में बैठे हो, पार जाने के लिए। फिर पुरानी कलियुगी दुनिया से दिल उठा लेनी होती है। इस शरीर द्वारा सिर्फ पार्ट बजाना होता है। अभी हमको वापिस जाना है बड़ी खुशी से। मनुष्य मुक्ति के लिए कितना माथा मारते हैं परन्तु मुक्ति-जीवनमुक्ति का अर्थ नहीं समझते हैं। शास्त्रों के अक्षर सिर्फ सुने हुए हैं परन्तु वह क्या चीज़ है,

Noah's ark
Genesis chapter(6-9)

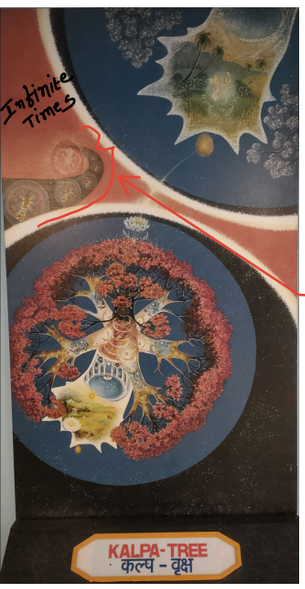

कौन देते हैं, कब देते हैं, यह कुछ भी पता नहीं है। तुम बच्चे जानते हो बाबा आते हैं मुक्ति-जीवनमुक्ति का वर्सा देने के लिए। वह भी कोई एक बार थोड़ेही, अनेक बार। बेअन्त बार तुम मुक्ति से जीवनमुक्ति फिर जीवन बंध में आये हो। तुम्हें अभी यह समझ पड़ी कि हम आत्मा हैं, बाबा हम बच्चों को शिक्षा बहुत देते हैं। तुम भक्तिमार्ग में दु:ख में याद करते थे, परन्तु पहचानते नहीं थे।

पदमा पदम *Thanks* मेरे मीठे बाबा...

अभी मैंने तुमको अपनी पहचान दी है कि कैसे मुझे याद करो तो तुम्हारे विकर्म विनाश होंगे। अभी तक कितने विकर्म हुए हैं, वह अपना पोतामेल रखने से पता पड़ेगा। जो सर्विस में लगे रहते हैं उनको पता पड़ता है, बच्चों को सर्विस का शौक होता है। आपस में मिलकर राय कर निकलते हैं सर्विस पर, मनुष्यों का जीवन हीरे जैसा बनाने। यह कितना पुण्य का कार्य है। इसमें खर्चे आदि की भी कोई बात नहीं। सिर्फ हीरे जैसा बनने के लिए बाप को याद करना है। पुखराज परी, सब्ज परी भी जो नाम हैं, वह तुम हो। जितना याद में रहेंगे उतना हीरे जैसा बन जायेंगे। कोई माणिक

जैसा, कोई पुखराज जैसा बनेंगे। 9 रत्न होते हैं ना। कोई ग्रहचारी होती है तो 9 रत्न की अंगूठी पहनते हैं। भक्ति मार्ग में बहुत टोटका देते हैं। यहाँ तो सब धर्म वालों के लिए एक ही टोटका है - मनमना-भव क्योंकि गॉड इज वन। मनुष्य से देवता बनने वा मुक्ति-जीवनमुक्ति पाने की तदबीर एक ही है, सिर्फ बाप को याद करना है, तकलीफ की कोई बात नहीं। सोचना चाहिए मुझे याद क्यों नहीं ठहरती। सारे दिन में इतना थोड़ा क्यों याद किया? जब इस याद से हम एवर हेल्दी, निरोगी बनेंगे तो क्यों न अपना चार्ट रख उन्नति को पायें। बहुत हैं जो 2-4 रोज़ चार्ट रख फिर भूल जाते हैं। कोई को भी समझाना बहुत सहज होता है। नई दुनिया को सतयुग और पुरानी को कलियुग कहा जाता है। कलियुग बदल सतयुग होगा। बदली होता है तब हम समझा रहे हैं।

कई बच्चों को यह भी पक्का निश्चय नहीं है कि यह वही निराकार बाप हमें ब्रह्मा तन में आकर पढ़ा रहे हैं। अरे ब्राह्मण हैं ना। ब्रह्माकुमार-कुमारियाँ

कहलाते हैं, उसका अर्थ ही क्या है, वर्सा कहाँ से मिलेगा! एडाप्शन तब होती है जब कुछ प्राप्ति होती है। तुम ब्रह्मा के बच्चे ब्रह्माकुमार-कुमारी क्यों बने हो? सचमुच बने हो या इसमें भी कोई को संशय हो पड़ता है। जो महान् सौभाग्यशाली बच्चे हैं वह स्त्री-पुरुष साथ में रहते भाई-भाई होकर रहेंगे। स्त्री-पुरुष का भान नहीं होगा। पक्के निश्चयबुद्धि नहीं हैं तो स्त्री-पुरुष की दृष्टि बदलने में भी टाइम लगता है। महान सौभाग्यशाली बच्चे झट समझ जाते हैं - हम भी स्टूडेन्ट, यह भी स्टूडेन्ट भाई-बहिन हो गये। यह बहादुरी चल तब सकती है जब अपने को आत्मा समझें। आत्मायें तो सब भाई-भाई हैं, फिर ब्रह्माकुमार-कुमारियाँ बनने से भाई-बहन हो जाते हैं। कोई तो बन्धनमुक्त भी हैं, तो भी कुछ न कुछ बुद्धि जाती है। कर्मातीत अवस्था होने में टाइम लगता है। तुम बच्चों के अन्दर बहुत खुशी रहनी चाहिए। कोई भी झंझट नहीं। हम आत्मायें अब बाबा के पास जाती हैं पुराने शरीर आदि सब छोड़कर। हमने कितना पार्ट बजाया है। अब चक्र पूरा होता है। ऐसे-ऐसे अपने

पूछो अपने आप से...

It is 2025 Hence, coming soon....

Refer last page to visualise...

साथ बातें करनी होती है। जितना बात करते रहेंगे, उतना हर्षित भी रहेंगे और अपनी चलन को भी देखते रहेंगे - कहाँ तक हम लक्ष्मी-नारायण को वरने लायक बने हैं? बुद्धि से समझा जाता है - अभी थोड़े से समय में पुराना शरीर छोड़ना है। तुम एक्टर्स भी हो ना। अपने को एक्टर्स समझते हो। आगे नहीं समझते थे, अभी यह नॉलेज मिली है तो अन्दर में खुशी बहुत रहनी चाहिए। पुरानी दुनिया से वैराग्य, नफरत आनी चाहिए।

हाँ मेरे मीठे बाबा...

Swamaan

तुम बेहद के संन्यासी, राजयोगी हो। इस पुराने शरीर का भी बुद्धि से संन्यास करना है। आत्मा समझती है - इनसे बुद्धि नहीं लगानी है। बुद्धि से इस पुरानी दुनिया, पुराने शरीर का संन्यास किया है। अभी हम आत्मायें जाती हैं, जाकर बाप से मिलेंगी। सो भी तब होगा जब एक बाप को याद करेंगे। और किसको याद किया तो स्मृति जरूर आयेगी। फिर सज़ा भी खानी पड़ेगी और पद भी भ्रष्ट हो जायेगा। जो अच्छे-अच्छे स्टूडेन्ट होते हैं

Be Alert...!

वह अपने साथ प्रतिज्ञा कर लेते हैं कि हम स्कॉलरशिप लेकर ही छोड़ेंगे। तो यहाँ भी हर एक को यह ख्याल में रखना है कि हम बाप से पूरा राज्य-भाग्य लेकर ही छोड़ेंगे। उनकी फिर चलन भी ऐसे ही रहेगी। आगे चल पुरुषार्थ करते-करते गैलप करना है। वह तब होगा जब रोज़ शाम को अपनी अवस्था को देखेंगे। बाबा के पास समाचार तो हर एक का आता है ना। बाबा हर एक को समझ सकते हैं, किसको तो कह देते कि तुम्हारे में वह नहीं दिखाई पड़ता है। यह लक्ष्मी-नारायण बनने जैसी शक्ल दिखाई नहीं पड़ती। चलन, खान -पान आदि तो देखो। सर्विस कहाँ करते हो! फिर क्या बनेंगे! फिर दिल में समझते हैं - हम कुछ करके दिखायें। इसमें हर एक को इन्डीपिन्डेंट अपनी तकदीर ऊंच बनाने के लिए पढ़ना है। अगर श्रीमत पर नहीं चलते तो फिर इतना ऊंच पद भी नहीं पा सकेंगे। अभी पास नहीं हुए तो कल्प कल्पान्तर नहीं होंगे। तुमको सब साक्षात्कार होंगे - हम किस पद पाने के लायक हैं? अपने पद का भी साक्षात्कार करते रहेंगे। शुरू में भी साक्षात्कार

m.m.m. Imp.

Point to ponder deeply

Take it Seriously...

Coming Soon...

Mind Very Well...

अब तो जागो....

Attention Please...!

करते थे फिर बाबा सुनाने के लिए मना कर देते थे। पिछाड़ी में सब पता पड़ेगा कि हम क्या बनेंगे फिर कुछ नहीं कर सकेंगे। कल्प-कल्पान्तर की यह हालत हो जायेगी। डबल सिरताज, डबल राज्य-भाग्य पा नहीं सकेंगे। अभी पुरुषार्थ करने की मार्जिन बहुत है, त्रेता के अन्त तक 16108 की बड़ी माला बननी है। यहाँ तुम आये ही हो नर से नारायण बनने का पुरुषार्थ करने। जब कम पद का साक्षात्कार होगा तो उस समय जैसे नफ़रत आने लगेगी। मुँह नीचे हो जायेगा। हमने तो कुछ भी पुरुषार्थ नहीं किया। बाबा ने कितना समझाया कि चार्ट रखो यह करो इसलिए बाबा कहते थे जो भी बच्चे आते हैं सबके फ़ोटोज़ हों। भल ग्रुप का ही इकट्ठा फोटो हो। पार्टियाँ ले आते हो ना। फिर उसमें डेट फिल्म आदि सब लगी हो। फिर बाबा बतलाते रहेंगे कौन गिरे? बाबा के पास समाचार तो सब आते हैं, बतलाते रहेंगे। कितनों को माया खींच ले गई। खत्म हो गये। बच्चियां भी बहुत गिरती हैं। एकदम दुर्गति को पा लेती हैं, बात मत पूछो इसलिए बाबा कहते हैं - बच्चे, खबरदार रहो।

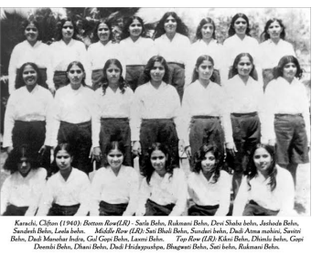

समजा?

अब तो जागो....

Attention...!

माया कोई न कोई रूप धरकर पकड़ लेती है। कोई के नाम-रूप के तरफ देखो भी नहीं। भल इन आंखों से देखते हो परन्तु बुद्धि में एक बाप की याद है। तीसरा नेत्र मिला है, इसलिए कि बाप को ही देखो और याद करो। देह अभिमान को छोड़ते जाओ। ऐसे भी नहीं आंखे नीचे करके कोई से बात करनी है। ऐसा कमज़ोर नहीं बनना है। देखते हुए बुद्धि का योग अपने बील्वेड माशुक की तरफ हो। इस दुनिया को देखते हुए अन्दर में समझते हैं यह तो कब्रिस्तान होना है। इनसे क्या कनेक्शन रखेंगे। तुमको ज्ञान मिलता है - उसको धारण कर उस पर चलना है।

Mind it...

तुम बच्चे जब प्रदर्शनी आदि समझाते हो तो हज़ार बार मुख से बाबा-बाबा निकलना चाहिए। बाबा को याद करने से तुम्हारा कितना फायदा होगा। शिवबाबा कहते हैं मामेकम् याद करो तो विकर्म विनाश होंगे। शिवबाबा को याद करो तो तमोप्रधान से सतोप्रधान बन जायेंगे। बाबा कहते हैं मुझे याद करो। यह भूलो मत। बाबा का

The World Almighty

डायरेक्शन मिला है मनमनाभव। बाप ने कहा है यह 'बाबा' शब्द खूब अच्छी तरह से घोटते रहो। सारा दिन बाबा-बाबा करते रहना चाहिए। दूसरी कोई बात नहीं। नम्बरवन मुख्य बात ही यह है। पहले बाप को जानें, इसमें ही कल्याण है। यह 84 का चक्र समझना तो बहुत इज़ी है। बच्चों को प्रदर्शनी में समझाने का बहुत शौक होना चाहिए।

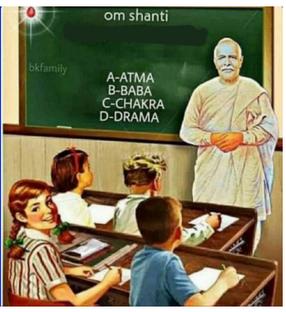

अगर कहाँ देखें हम नहीं समझा सकते हैं तो कह सकते हैं हम अपनी बड़ी बहन को बुलाते हैं क्योंकि यह भी पाठशाला है ना। इसमें कोई कम, कोई जास्ती पढ़ते हैं। इस कहने में देह अभिमान नहीं आना चाहिए। जहाँ बड़ा सेन्टर हो वहाँ प्रदर्शनी भी लगा देनी चाहिए। चित्र लगा हुआ हो - गेट वे टू हेविन। अब स्वर्ग के द्वार खुल रहे हैं। इस होवनहार लड़ाई से पहले ही अपना वर्सा ले लो।

जैसे मन्दिर में रोज़ जाना होता है, वैसे तुम्हारे पीछे पाठशाला है। चित्र लगे हुए होंगे तो समझाने में सहज होगा। कोशिश करो हम अपनी पाठशाला को चित्रशाला कैसे बनायें? भभका भी होगा तो मनुष्य आयेंगे। बैकुण्ठ जाने का रास्ता, एक

सेकण्ड में समझने का रास्ता। बाप कहते हैं तमोप्रधान तो कोई बैकुण्ठ में जा न सके। नई दुनिया में जाने लिये सतोप्रधान बनना है, इसमें कुछ भी खर्चा नहीं। न कोई मन्दिर वा चर्च आदि में जाने की दरकार है। याद करते-करते पवित्र बन सीधा चले जायेंगे स्वीट होम। हम गैरन्टी करते हैं तुम इमप्योर से प्योर ऐसे बन जायेंगे। गोले में गेट बड़ा रहना चाहिए। स्वर्ग का गेट कैसे खुलता है। कितना क्लीयर है। नर्क का गेट बन्द होना है। स्वर्ग में नर्क का नाम नहीं होता है। कृष्ण को कितना याद करते हैं। परन्तु यह किसको मालूम नहीं पड़ता कि वह कब आते हैं, कुछ भी नहीं जानते। बाप को ही नहीं जानते हैं। भगवान हमको फिर से राजयोग सिखलाते हैं - यह याद रहे तो भी कितनी खुशी होगी। यह भी खुशी रहे हम गॉड फादरली स्टूडेन्ट हैं। यह भूलना क्यों चाहिए। अच्छा!

ये पकका समझ लो

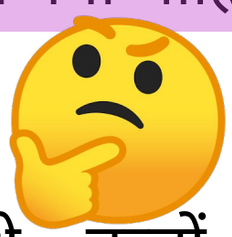

मीठे-मीठे सिकीलधे बच्चों प्रति मात-पिता बापदादा का याद-प्यार और गुडमॉर्निंग। रूहानी बाप की रूहानी बच्चों को नमस्ते।

धारणा के लिए मुख्य सार:-

1) सारा दिन मुख से बाबा-बाबा निकलता रहे, कम से कम प्रदर्शनी आदि समझाते समय मुख से हज़ार बार बाबा-बाबा निकले।

2) इन आंखों से सब कुछ देखते हुए, एक बाप की याद हो, आपस में बात करते हुए तीसरे नेत्र द्वारा आत्मा को और आत्मा के बाप को देखने का अभ्यास करना है।

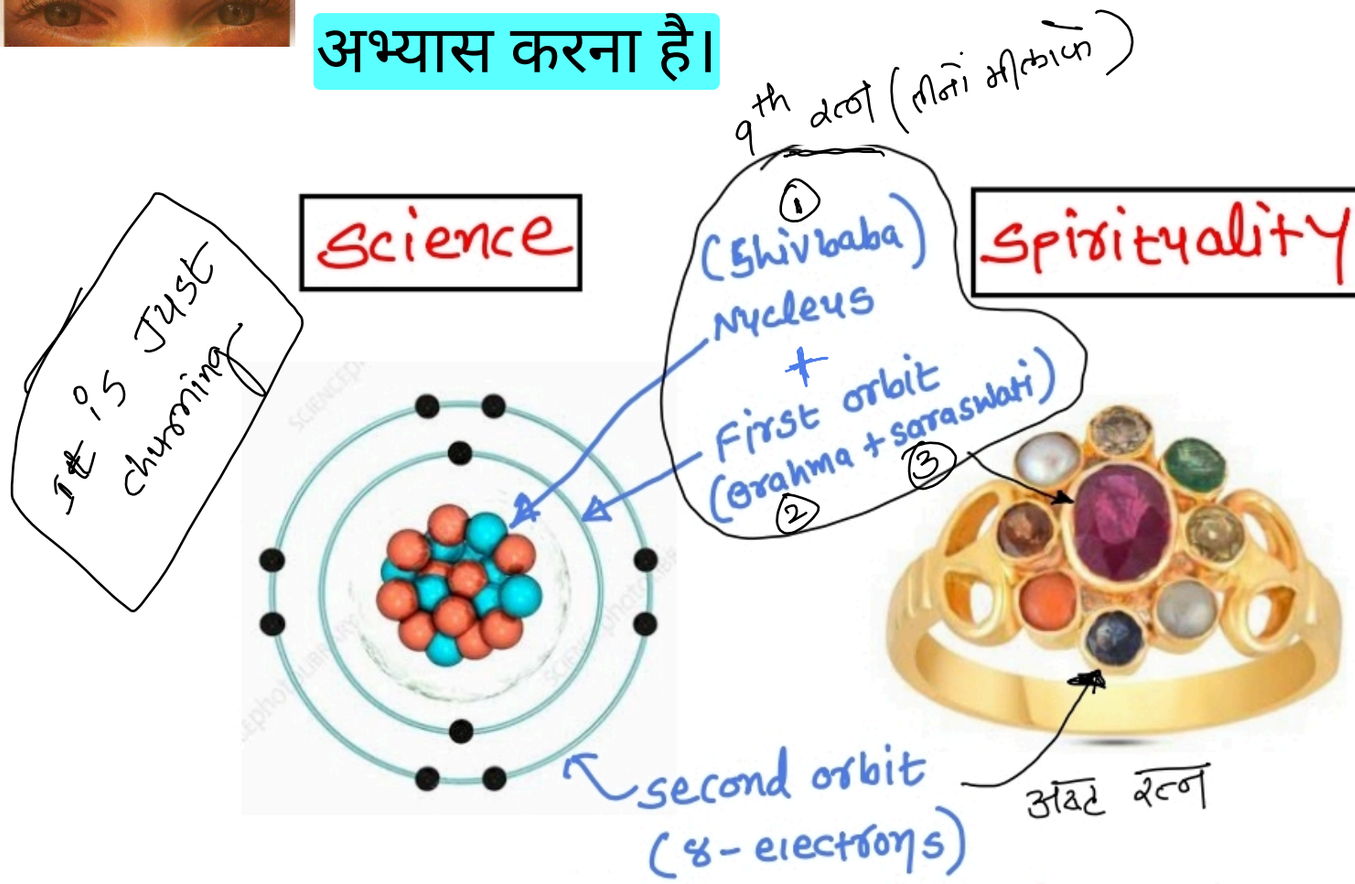

Science is the Reflection of spirituality

They are Invaluable Treasures

वरदान:-हर सेकण्ड और संकल्प को अमूल्य रीति से व्यतीत करने वाले अमूल्य रत्न भव

Why baba says this

Point to ponder very deeply

संगमयुग के एक सेकण्ड की भी बहुत बड़ी वैल्यु है।

Very Subtle Point to Understand

जैसे एक का लाख गुणा बनता है वैसे यदि एक सेकण्ड भी व्यर्थ जाता है तो लाख गुणा व्यर्थ जाता है - इसलिए इतना अटेन्शन रखो तो अलबेलापन समाप्त हो जायेगा।

Coming very Soon...

अभी तो कोई हिसाब लेने वाला नहीं है लेकिन थोड़े समय के बाद पश्चाताप होगा क्योंकि इस समय की बहुत वैल्यु है।

जो अपने हर सेकण्ड, हर संकल्प को अमूल्य रीति से व्यतीत करते हैं वही अमूल्य रत्न बनते हैं।

पुरुषार्थ

स्लोगन:- जो सदा योगयुक्त हैं वो सहयोग का अनुभव करते विजयी बन जाते हैं।

अव्यक्त इशारे-आत्मिक स्थिति में रहने का अभ्यास करो, अन्तर्मुखी बनो

आत्मा शब्द स्मृति में आने से ही रूहानियत के साथ शुभ-भावना भी आ जाती है। पवित्र दृष्टि हो जाती है।

चाहे भल कोई गाली भी दे रहा हो लेकिन यह स्मृति रहे कि यह आत्मा तमोगुणी पार्ट बजा रही है तो उससे नफरत नहीं करेंगे, उसके प्रति भी शुभ भावना बनी रहेगी।

Very Subtle Point to Understand

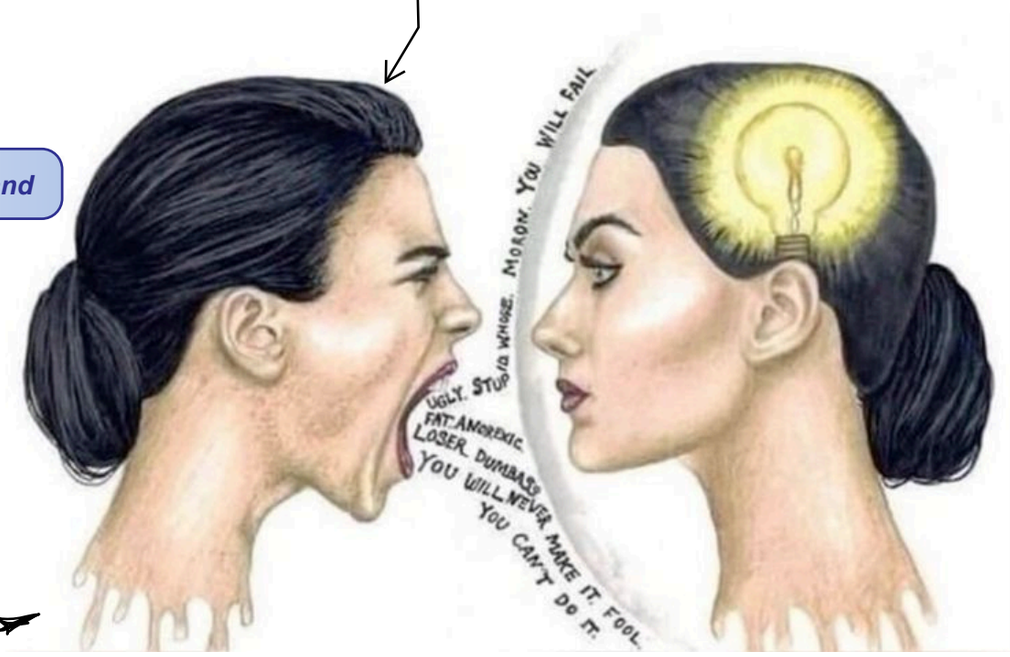

ये आत्मा तो बहुत अच्छी है, सिर्फ तमोगुणी part play कर रही है

We all are Actors & we should Appriciate that soul for playing negative role Perfectly.

"फाइनल पेपर" book से प्राण प्यारे अव्यक्त बापदादा के महावाक्य जो यहां रखते हैं, वो नये महावाक्य हर चौथे दिन पर रखते है, जिसका उद्देश्य ये है की आज के जो महावाक्य यहां रखे गए हैं उसको कल और परसों रिवाइज कर सके। जिससे कि वह महावाक्य हमारे अंदर तक उतर जाए।

नहीं तो क्या होता है कि हर रोज नए महावाक्य आते हैं तो आगे के महावाक्य जैसे कि बुद्धि से मिट से जाते है। इसलिए हम एक ही महावाक्य को तीन दिन तक revise करेंगे। जिससे कि वो महावाक्य हमारे अंतर मन मे उतर जाएंगे।

Revision is the key to Remember/inculcation...

आप भी महसूस करेंगे कि आज के वही महावाक्य , दूसरे - तीसरे दिन के revision पर उसका अति गूढ़ अर्थ (यथा शक्ति पुरुषार्थ प्रमाण) आपके सामने प्रगट होगा।। इसी को मीठे प्यारे बापदादा ज्ञान का मनन-मंथन व ज्ञान की गहराई में जाना कहते है।

फाइनल पेपर

जिस प्रकार बिना मथे दूध में छिपा माखन नहीं मिल सकता
उसी प्रकार हमें इन महा वाक्यों को revise करके उसकी गहराई तक जाना पड़ेगा तभी माखन व सच्चे रत्न प्राप्त होंगे।

36

यह भी चेक करना है कि बहुत समय से ओर एक-रस अर्थात् लगातार क्या चारों ही सम्बन्ध निभाते रहे हैं या बीच-बीच में कट हुआ है? अगर बीच में कुछ मार्जिन रह गयी है तो बार-बार कटी हुई चीज़ कमजोर होती है। इसलिये अपने जीवन को इन चारों ही बातों के आधार पर रिवाईज कर के देखो। इस चैकिंग को करके अपने-आप को परख सकेंगे कि मेरी प्राप्ति व प्रारब्ध क्या हैं?

52

जैसे चार सब्जेक्ट्स हैं, वेसे ही चार सम्बन्ध सामने लाओ और इन चार सम्बन्धों के आधार से मुख्य चार धारणायें हैं। एक तो बाप के सम्बन्ध में-'फरमान वरदार', शिक्षक के सम्बन्ध में-'इर्मानदार' और गुरू के सम्बन्ध में-'आज्ञाकारी' और साजन के सम्बन्ध में-'वफादार।'

जो यह चारों सम्बन्ध और चार विशेष धारणायें इन सभी को रिवाइज करके देखो।

फाइनल पेपर

सूर्यवंशी है या चन्द्रवंशी हैं? सूर्यवंशी में राजाई फैमिली में हैं या स्वयं महाराजा महारानी बनने वाले हैं? अभी जबकि समय नजदीक है फाइनल पेपर का तो जैसे लौकिक पढ़ाई में भी सभी सब्जेक्टस को रिवाइज किया जाता है ओर एक-एक सबजेक्टस को रिवाइज कर अपनी कमी को सम्पन्न करते हैं, इसी प्रकार सभी को अपने पुरुषार्थ को इसी रीति रिवाइज करना है। कैसे स्वयं का जस्टिस बनो अभी वह तरीका सुना रहे हैं। जब स्वयं को जज़ करना आ जायेगा तो फिर दूसरों को भी सहज ही परख सकेंगे। जब स्वयं प्राप्ति-सम्पन्न होगें तो दूसरों को भी प्राप्ति करा सकेंगे। यह चेक करना तो सहज है ना? एक सब्जेक्ट् अथवा एक सम्बन्ध व एक धारणा व एक सलोगन में भी कमी नहीं होनी चाहिए।

26/6/25

(21.07.1973)

इसे सिर्फ देखना नहीं है,
किन्तु अनुभव करना है।

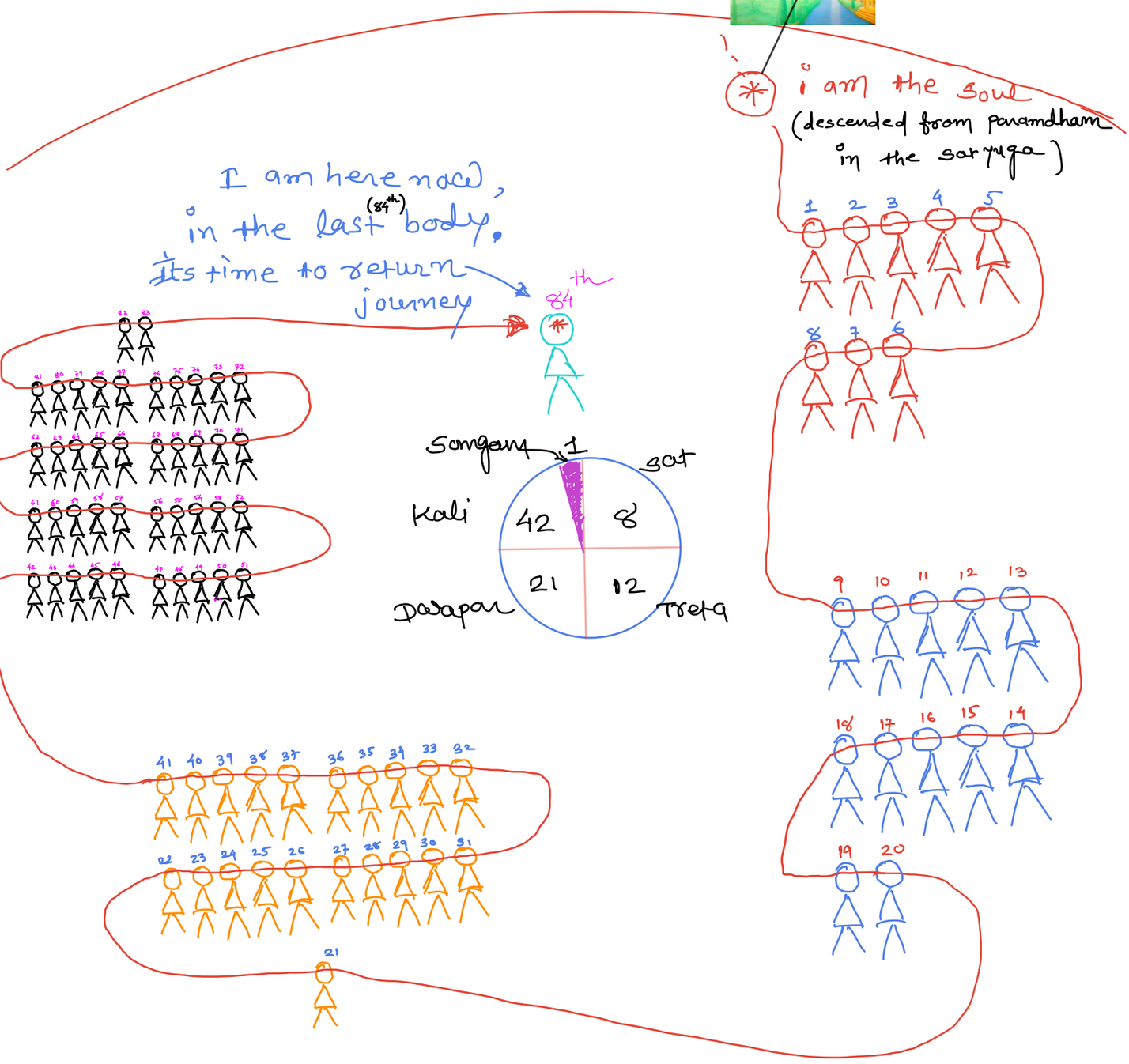

I (the sparkling soul) am same throughout all 84 costumes (male & female both).

I am immortal, eternal, imperishable. The costumes are perishable.

Geeta Adhyay : 2
shloka

न जायते म्रियते वा कदाचि नायं भूत्वा भविता वा न भूय: | अजो नित्य: शाश्वतोऽयं पुराणो न हन्यते हन्यमाने शरीरे || 20||

The soul is neither born, nor does it ever die; nor having once existed, does it ever cease to be. The soul is without birth, eternal, immortal, and ageless. It is not destroyed when the body is destroyed.

It's very long journey we have. Now, its time to return in our sweet silence home to rest in the lap of our sweet father shiva.